International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 02-07-2026, Accepted: 02-08-2026, Published: 17-08-2026
Volume 12, Issue 3, 2026, Page No. 99-101

हिंदी और मराठी स्त्री आत्मकथाओं में पितृसत्तात्मक व्यवस्था को चुनौती: रमणिका गुप्ता कृत 'हादसे'/'आपहुदरी' और मलिका अमर शेख कृत 'मैं बरबाद होना चाहती हूँ' के विशेष संदर्भ में

उषा रानी[1], डॉ. कल्पना[2]
[1] शोधार्थी, हिंदी विभाग, गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार, हरियाणा, भारत
[2] शोध निर्देशक, सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग, गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार, हरियाणा, भारत
DOI: https://doi.org/10.66856/ijhr.2026.12.3.12214

सारांश
प्रस्तुत शोध–पत्र हिंदी और मराठी की दो चर्चित स्त्री आत्मकथाओं – रमणिका गुप्ता कृत 'हादसे' एवं 'आपहुदरी' और मलिका अमर शेख कृत 'मैं बरबाद होना चाहती हूँ' में पितृसत्तात्मक व्यवस्था को दी गई चुनौती का तुलनात्मक विश्लेषण करता है। आत्मकथा में लेखक अपने जीवन की सच्ची घटनाओं को लिखता है। जब एक स्त्री अपनी आत्मकथा लिखती है तो वह केवल अपनी कहानी नहीं लिखती, बल्कि उन सभी स्त्रियों की सामूहिक पीड़ा को भी वाणी देती है जो समाज में घुट–घुट कर जीती हैं। इस शोध का उद्देश्य यह समझना है कि समाज में व्याप्त पितृसत्ता यानी पुरुष वर्चस्व को इन दोनों लेखिकाओं ने किस प्रकार चुनौती दी है।
अध्ययन में यह पाया गया कि दोनों लेखिकाओं का संघर्ष अलग–अलग धरातल पर है। रमणिका गुप्ता की लड़ाई बाहर की दुनिया से है, जहाँ वे सामंती परिवार की रूढ़ियों को तोड़कर मजदूर आंदोलन और राजनीति में अपनी पहचान बनाती हैं। वहीं, मलिका अमर शेख की लड़ाई घर के भीतर की है, जहाँ वे यह उजागर करती हैं कि बाहर से क्रांतिकारी दिखने वाला पुरुष भी घर के अंदर किस प्रकार शोषक बन सकता है। दोनों लेखिकाओं ने समाज द्वारा निर्मित 'आदर्श नारी', लज्जा और त्याग के पारम्परिक मानदंडों को अस्वीकार कर अपनी देह, इच्छा और अस्मिता पर स्वयं के अधिकार का दावा किया है। निष्कर्षतः यह शोध स्थापित करता है कि 'आपहुदरी' और 'बरबाद' जैसे नकारात्मक शब्दों को ही इन लेखिकाओं ने अपनी स्वतंत्रता का प्रतीक बना लिया है।

मूल शब्दः स्त्री आत्मकथा, पितृसत्ता, विद्रोह, अस्मिता, देह–विमर्श

भूमिका
आत्मकथा गद्य साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा है। आत्मकथा शब्द 'आत्म' और 'कथा' दो शब्दों से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है – स्वयं के जीवन की कथा। इसमें रचनाकार अपने जीवन की घटनाओं, विचारों, अनुभवों और अपने समय के समाज की स्थिति को सत्य और ईमानदारी के साथ प्रस्तुत करता है। अन्य विधाओं की तुलना में आत्मकथा को अधिक प्रामाणिक माना जाता है क्योंकि इसमें लेखक आत्मावलोकन करते हुए अपने जीवन के उतार–चढ़ाव, सफलताओं और निजी तथ्यों को कलात्मक ढंग से प्रस्तुत करता है।
हिंदी साहित्य में आत्मकथा लेखन की परम्परा पुरानी है। बनारसीदास जैन कृत 'अर्द्धकथानक' (1641) को हिंदी की प्रथम आत्मकथात्मक कृति माना जाता है। हिंदी साहित्य में महिला आत्मकथा लेखन की व्यवस्थित शुरुआत बीसवीं शताब्दी के मध्य से हुई। हिंदी की प्रथम स्त्री आत्मकथा लेखिका जानकी देवी बजाज हैं, जिनकी आत्मकथा 'मेरी जीवन यात्रा' सन् 1956 में प्रकाशित हुई। इसके पश्चात् अनेक स्त्री आत्मकथाएँ प्रकाश में आईं।
महिलाओं की आत्मकथाओं में उनके वैयक्तिक जीवन और आंतरिक मन की भावनाओं का सजीव चित्रण मिलता है। इन आत्मकथाओं में स्त्री जीवन की संघर्ष–भरी यात्रा का दस्तावेज है। इस विधा के माध्यम से स्त्रियों को अपनी वेदना, व्यथा और पीड़ा को अभिव्यक्त करने का अवसर प्राप्त हुआ। पुराने समय में स्त्रियाँ अपनी अनुभूतियों को या तो मन के भीतर ही रखती थीं या लोकगीतों और कथाओं के माध्यम से प्रकट करती थीं, परन्तु वर्तमान में महिलाएँ अपनी अनुभूतियों को आत्मकथाओं के माध्यम से सशक्त रूप में प्रस्तुत कर रही हैं, जो उनकी अस्मिता और स्वतंत्रता के संघर्ष का प्रतीक है।

हिंदी–मराठी आत्मकथा में तुलनात्मक अध्ययन
समानताएँ
1. दोनों ही आत्मकथाएँ स्त्री लेखिकाओं द्वारा लिखी गई हैं, इसलिए दोनों में स्त्री दृष्टिकोण प्रमुख है ।
2. दोनों लेखिकाओं ने आदर्श नारी के खोखले ढाँचे को नकार दिया है।
3. दोनों ही लेखिकाओं ने पुरुष के अहंकार पर प्रहार किया है तथा पुरुष सत्ता को चुनौती दी है।
4. दोनों आत्मकथाओं में अत्यंत निर्भीक अभिव्यक्ति देखने को मिलती है चाहे वो देह और यौन प्रसंगों से जुड़ी हो चाहे राजनीति से।
5. दोनों लेखिकाओं द्वारा परिवार के अंदर रहते हुए भी उनके अकेलेपन की पीड़ा का वर्णन किया गया है।
6. दोनों समाज तथा परिवार के द्वारा स्थापित पुरानी मान्यताओं तथा धार्मिक बेड़ियों को तोड़ती हैं।
7. दोनों लेखिकाएँ समकालीन हैं तथा दोनों ने उस समय के सामाजिक–राजनीतिक पक्ष को उजागर किया है।
8. दोनों ने स्त्री को अपनी अस्मिता तथा स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत होते दिखाया है।
9. दोनों ने स्त्री देह को लज्जा का विषय न मानते हुए उसे अपने स्वाभिमान से जोड़ा है।

विषमताएँ
1. रमणिका गुप्ता का विद्रोह सार्वजनिक तथा राजनीतिक है जबकि मलिका अमर शेख का विद्रोह निजी एवं आंतरिक है।
2. रमणिका गुप्ता हिंदी परिवेश व श्रमिक आंदोलन से जुड़ी हैं जबकि मलिका शेख मराठी परिवेश व पैंथर आंदोलन से जुड़ी हुई हैं।

3. रमणिका गुप्ता की भाषा विद्रोही, आक्रामक और सीधी है जबकि मलिका अमर शेख की भाषा मर्मस्पर्शी और दुख से भरी है।
4. रमणिका गुप्ता ने अपनी आत्मकथा में सामाजिक व राजनीतिक संघर्ष का वर्णन किया है, जबकि मलिका अमर शेख ने अपने विवाहित जीवन के नरकीय अनुभव का वर्णन किया है।
5. रमणिका गुप्ता ने स्वयं को पितृसत्तात्मक समाज को आँख दिखाने वाली स्त्री के रूप में चित्रित किया है जबकि मलिका अमर शेख ने पुरुष के वर्चस्व के नीचे कुचली हुई स्त्री के विलाप का वर्णन किया है।
6. रमणिका जी जुझारू व बहिर्मुखी प्रवृत्ति की लेखिका हैं जबकि मलिका जी भावुक व अंतर्मुखी प्रवृत्ति की लेखिका हैं।
7. रमणिका गुप्ता विवाह बंधन को तोड़कर आगे बढ़ जाती हैं, जबकि मलिका शेख उसी बंधन में रहकर उसकी पीड़ा को व्यक्त करती हैं ।

हादसे आत्मकथा

यह आत्मकथा सन् 2005 में प्रकाशित हुई। इस आत्मकथा में रमणिका जी के जीवन के सामाजिक तथा राजनीतिक संघर्षों का क्रमानुसार वर्णन किया गया है। इसमें उनके जुझारू व्यक्तित्व के निर्माण की कथा का वर्णन हुआ है। लेखिका ने अपने बचपन के उन हादसों का जिक्र किया है जिनसे उनके मन में विद्रोह के बीज पड़े और उन्होंने रीति–रिवाजों को तोड़कर अपनी शिक्षा तथा अपनी पहचान को प्राथमिकता दी। इस आत्मकथा में रमणिका जी ने बिहार व झारखंड के सामंती ढाँचे का राजनीतिक वर्णन किया है तथा झारखंड की कोयला खदानों से शुरू करके स्वयं के बिहार विधानसभा की सदस्य बनने तक के सफर का वर्णन किया है। 'हादसे' एक प्रकार से सामाजिक अन्याय और राजनीति के गंदे गलियारों के बीच अपनी अस्मिता गढ़ने का एक निर्भीक घोषणापत्र है।

आपहुदरी आत्मकथा

यह इनकी आत्मकथा का दूसरा भाग है जो 2015 में प्रकाशित हुई। इसमें एक रचनाकार, सामाजिक कार्यकर्ता व राजनेता के रूप में रमणिका जी का धनबाद तक का जीवन बड़े रोचक ढंग से सामने आता है। यह एक निर्भीक स्त्री के जीवन पर आधारित आत्मकथा है जैसा कि उन्होंने शुरुआत में ही स्पष्ट कर दिया है –

"उन स्त्रियों के हठ को जिसने उन्हें 'आपहुदरी' बनाया, उनके उस फैसले को जिसने अपनी राह खुद चुनी, उनके उस हौसले को जिसने जोखिम उठाया पर कभी हारा नहीं..." [1]

इस आत्मकथा का शीर्षक ही अपने आप में बहुत महत्वपूर्ण है – "आपहुदरी–एक जिद्दी लड़की की आत्मकथा"। इसमें रमणिका जी ने अपनी ज़िंदगी का ब्यौरा बड़ी बेबाकी एवं सच्चाई के साथ प्रस्तुत किया है। वे लिखती भी हैं कि "मैंने आत्मकथा लिखने की ठानी। मैं लिखूंगी आत्मकथा। एकदम बेबाक होकर, सच लिखूंगी–एकदम सच! अपनी गलतियों को भी स्वीकारूंगी और उन पर चोट भी करूंगी। इतनी लम्बी ज़िंदगी है मेरी। हां, सारी जिंदगी का लेखा–जोखा करूंगी मैं।" [2]

रमणिका जी सामंती परिवार की एक औरत हैं जहाँ औरत को कोई अधिकार और स्वतंत्रता नहीं दी जाती और पुरुष उन पर अपना अधिकार जमाये रखते हैं। पुरुष कोई भी अपराध बिना किसी भय के कर सकते हैं जबकि महिलाओं के एक छोटे से अपराध पर ही उन्हें चरित्रहीन घोषित कर दिया जाता है। वे कहती हैं कि "पुरुष सभी का बिना अपराधबोध के उपभोग करता था। स्त्री अपराध–बोधों की पिटारी थी! अपनी जरा–सी बेवफ़ाई उसे अपनी ही निगाहों में चोर बना देती थी और चोर बनाने वाला पुरुष बेदाग रहता था।" [3]

रमणिका जी में समाज द्वारा तय किए गए रास्तों से अलग स्वयं कुछ कर गुज़रने की ललक और अपने रास्ते खुद बनाने की क्षमता है। वे आत्मकथा में एक जगह कहती भी हैं – "मैं परिवार से हटकर स्वयं कुछ करना चाहती थी। परिवार के रीति–रिवाज़, विश्वास, मान्यताएं या गौरवशाली इतिहास से अलग, अपने मन से फैसला लेकर कुछ करने की सनक मुझ पर सवार थी। [4]"

मैं बरबाद होना चाहती हूँ

यह मलिका अमर शेख द्वारा रचित मराठी आत्मकथा है जो सन् 1984 में प्रकाशित हुई और एक ईमानदार दस्तावेज मानी जाती है। इसका हिंदी अनुवाद सुनीता डागा ने किया है। मलिका जी आत्मकथा के शीर्षक में ही स्पष्ट करती हैं कि एक स्त्री के रूप में वे इस पितृसत्तात्मक व्यवस्था से न्याय चाहती हैं। यह आत्मकथा मलिका जी के विवाह की कहानी है, इनका विवाह मराठी के युग प्रवर्तक कवि नामदेव ढसाल के साथ हुआ परंतु नामदेव एक पति के रूप में वैसे नहीं उभर कर आए जैसी उम्मीद मलिका ने की थी। यह कहानी उस स्त्री की है जो इस पुरुष संसार में अपनी जगह ढूंढने की कोशिश में है। इस आत्मकथा में मराठी दलित आंदोलन के अंतर्विरोधों, मुंबई शहर, उसके कवियों तथा एक्टिविस्टों की कहानी भी है। मलिका जी स्त्री को लज्जा, संकोच व त्याग जैसी सहनशील चीजों को अपने से दूर करने की सलाह देती हैं। वे कहती भी हैं कि "स्त्री जब तक लज्जा, संकोच और त्याग के सहनशील वस्त्र उतारकर फेंक नहीं देती है, तब तक उसके भोगे हुए की, उसके दुख की उपेक्षा ही होती है। [5]"

मलिका जी को विवाह के पश्चात अहसास हुआ कि भले ही नामदेव ढसाल बहुत अच्छे कवि हैं, भले ही वे अपनी कविताओं के प्रति ईमानदार हैं परंतु वे एक अच्छे पति के रूप में नहीं उभरे। वे कहती भी हैं कि "परन्तु एक अच्छा कवि अच्छा पति या साथी बन सकता है, इस पर मुझे भरोसा नहीं है। [6]" नामदेव ढसाल के होते हुए भी मलिका ने अपने जीवन में हर क्षण खुद को अकेला महसूस किया है। वे कहती हैं कि "अकेलेपन का विष पचाना भयावह होता है। [7]"

शोध कार्य का महत्व और उद्देश्य

मेरे शोध कार्य का उद्देश्य हिंदी तथा मराठी आत्मकथाओं में स्त्री जीवन के संघर्षों, उनकी समस्याओं तथा उनकी घुटन एवं पीड़ा को पाठकों से परिचित करवाना है ताकि वे स्त्री संघर्ष को समझ सकें। इस शोध कार्य के निम्न उद्देश्य रहे हैं–

1. हिंदी–मराठी स्त्री आत्मकथाओं के योगदान का वर्णन करना।
2. स्त्री के सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक जीवन का वर्णन करना।
3. स्त्री द्वारा पुराने रीति–रिवाजों को तोड़कर अपने लिए नए रास्ते बनाने के संघर्ष का वर्णन करना।
4. महिलाओं के जीवन के स्वर को, उनकी पीड़ा तथा उनके अनुभवों को समाज के सामने लाना।

शोध की प्रासंगिकता

इन दोनों आत्मकथाओं पर शोध करना आज के समय में अत्यधिक प्रासंगिक है। यह शोध दिखाता है कि कैसे मराठी के बहुत बड़े कवि नामदेव ढसाल समाज में प्रगतिशील के रूप में दिखाई देते हैं परंतु घर के भीतर घोर शोषक के रूप में उभरते हैं। यह शोध स्पष्ट करता है कि स्त्री किसी की बेटी, पत्नी या बहन होने से पहले एक स्वतंत्र मनुष्य है। इस शोध के माध्यम से यह भी स्पष्ट होता है कि शारीरिक चोट से ज़्यादा ज़ख्म

मानसिक शोषण का होता है। यह शोध स्पष्ट करता है कि साहित्य में व्यक्तिगत जीवन की जहरीली सच्चाई बताना 'बेशर्मी' नहीं बल्कि 'साहस' है

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध कार्य में हिंदी की लेखिका रमणिका गुप्ता की आत्मकथाओं 'हादसे' और 'आपहुदरी' तथा मराठी की लेखिका मलिका अमर शेख की आत्मकथा 'मैं बरबाद होना चाहती हूँ' का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। दोनों आत्मकथाओं के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि भाषा भले ही अलग–अलग हो – एक हिंदी की और दूसरी मराठी की – परंतु दोनों में स्त्री के संघर्ष का स्वर एक जैसा है। दोनों ही लेखिकाओं ने पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री की स्थिति, उसके शोषण और उसकी पीड़ा को बड़ी निर्भीकता के साथ प्रस्तुत किया है। रमणिका गुप्ता ने जहाँ सामाजिक और राजनीतिक स्तर पर अपनी पहचान बनाई, वहीं मलिका अमर शेख ने वैवाहिक जीवन की त्रासदी के माध्यम से स्त्री जीवन की सच्चाई को सामने रखा। एक ने घर की चारदीवारी को तोड़कर बाहर संघर्ष किया, तो दूसरी ने घर के भीतर रहकर ही उस संघर्ष को भोगा।

अंत में कहा जा सकता है कि दोनों ही आत्मकथाएँ स्त्री अस्मिता और स्त्री स्वतंत्रता का महत्वपूर्ण दस्तावेज हैं। ये आत्मकथाएँ केवल दो लेखिकाओं की व्यक्तिगत कहानी नहीं हैं, बल्कि उस प्रत्येक स्त्री की कहानी हैं जो अपने अस्तित्व के लिए लड़ रही है। यही इन दोनों आत्मकथाओं की प्रासंगिकता और सार्थकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. गुप्ता, रमणिका, आपहुदरी, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2015, पृ. 5
2. गुप्ता, रमणिका, आपहुदरी, पृ.23
3. गुप्ता, रमणिका, आपहुदरी, पृ. 70
4. गुप्ता, रमणिका, आपहुदरी, पृ. 166
5. हिंदी–मराठी स्त्री आत्मकथाओं के योगदान का वर्णन करना।
6. स्त्री के सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक जीवन का वर्णन करना।
7. स्त्री द्वारा पुराने रीति–रिवाजों को तोड़कर अपने लिए नए रास्ते बनाने के संघर्ष का वर्णन करना।
8. महिलाओं के जीवन के स्वर को, उनकी पीड़ा तथा उनके अनुभवों को समाज के सामने लाना।
9. गुप्ता, रमणिका – हादसे, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005
10. गुप्ता, रमणिका – आपहुदरी, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015
11. शेख, मलिका अमर – मैं बरबाद होना चाहती हूँ (मूल मराठी – मला उद्धवस्त व्हायचंय, 1984), हिंदी अनुवाद – सुनीता डागा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010